विशद

शनिग्रहारिष्ट निवारक विधान

माण्डला

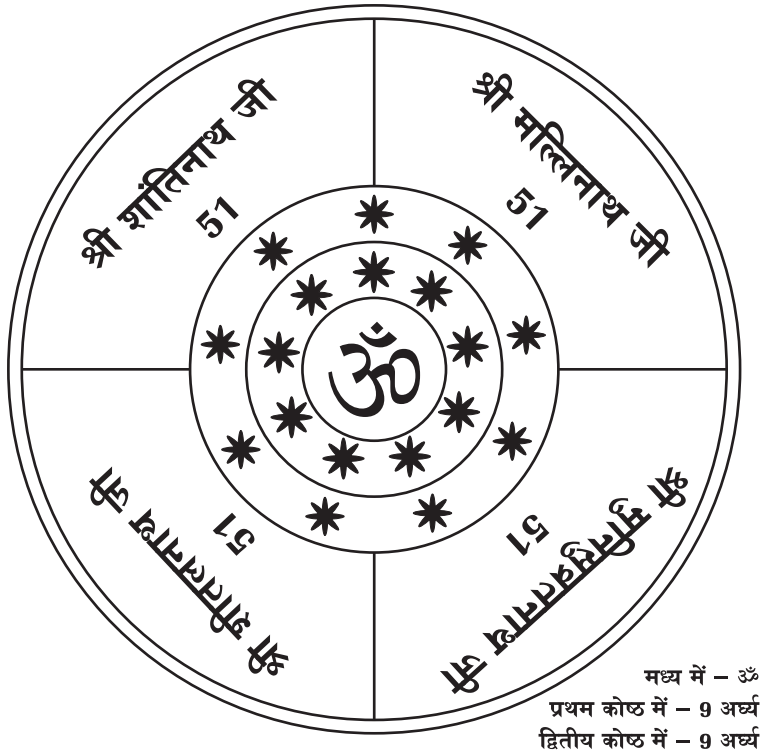

मध्य में – ॐ
प्रथम कोष्ठ में – 9 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ में – 9 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ में – 51 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठ में – 51 अर्घ्य
पंचम कोष्ठ में – 51 अर्घ्य
षष्ठम कोष्ठ में – 51 अर्घ्य
कुल 222 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद शनिग्रहारिष्ट निवारक विधान**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2016' प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी

सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी, क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी
ब्र. आरती दीदी

E-mail : vishadsagar11@gmail.com

प्राप्ति स्थल :
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो. : 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566
3. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879
4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971

मूल्य : 25/- रु. मात्र

:: अर्थ सौजन्य ::

Lo- Jh xV~Vwyky th tSu dh iq.;Le`fr esa muds lqiq= Jh pSusUnz dqekj /keZsUnz dqekj deys'k dqekj v#.k dqekj ,oa izikS= vfjgar eksfgr iqyfdr lEesn f'k[kj (ipsojokys)
318, रजनी विहार, अजमेर रोड, जयपुर (राज.) मो.: 09414055883

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

शनिग्रहारिष्ट निवारक पूजा विधान

दोहा– शनि अरिष्ट निवारक कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनकी अर्चा से मिले, सुख शांती का दान॥

शनिग्रहारिष्ट पूजा शनिवार के दिन स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनकर प्रात: काल में की जाती है। पूजन के समय तक कोई भी आहार आदि ग्रहण न करें। पूजन में सबसे पहले मंगलाष्टक सकलीकरण कर दिग्बंधन आदि के बाद अभिषेक शांतिधारा कर देव शास्त्र गुरु की पूजा एवं तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रादिक के लिए अर्घ्य समर्पित करके श्री नवदेवता पूजा के बाद श्री शीतलनाथ भगवान, श्री शांतिनाथ भगवान, श्री मल्लिनाथ भगवान, श्री मुनिसव्रत नाथ की पूजा एवं जयमाला में श्रीफल चढ़ायें और जयमाला के पहले 51 मंत्रों की आहुति अर्घ या धूप क्षेपण करके करना चाहिए। जयमाला में श्रीफल चढ़ाकर अंत में महाअर्घ्यं, शांतिपाठ, विसर्जन कर समापन करना चाहिए। पूजन के दिन अभक्ष्य आहार नहीं करें और कोई भी तेल की सामग्री उस दिन ग्रहण न करें।

जाप : ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री शीतलनाथ, शांतिनाथ मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत जिनेन्द्रेभ्यो नम:

जाप: ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नम: मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु

पाँच माला प्रति शनिवार नौ शनिवार या तेइस शनिवार तक करना चाहिए। यह माला सफेद वस्त्र पहनकर करनी चाहिए। घी का दीपक सामने जलाकर करें। साथ ही श्री मुनिसुव्रतनाथ का चालीसा भी करते रहना चाहिए। शनिवार को श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की आरती अवश्य करें।

संकलन – मुनि विशालसागर जी

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र

दोहा- **भूमण्डल के ज्योति प्रभू, तीन लोक के नाथ।**
वन्दन कर जिनदेव के, चरण झुकाऊँ माथ।।

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीश झुकाते चरणों में, प्रभू सिद्धों की पदवी पावें।1।

शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ति को पाता है।2।

जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।
वह दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरें।3।

यह प्रभू का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभू पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभू आप शरण में आया है।4।

ये जग दुक्खों से पूरित है, सुख शांती का है लेश नहीं।
तीनों लोकों में भटक लिया, पर सुख पाया है नहीं कहीं।
हम सुख अतिन्द्रिय पाने को, प्रभू तव चरणों में आए हैं।
हम भक्ति भाव से शीश झुकाकर, प्रभू चरणों सिर नाए हैं।5।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।

एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

'kfuxzgkfj'Vfuokjd leoPp; iwtu

स्थापना

शीतल नाथ जिनेश्वर जग में, शीतलता शुभ करें प्रदान।
शांतीनाथ जगत जीवों को, देते हैं शांती का दान॥
कर्म रूप मल्लों को करते, स्वयं पराजित मल्लीनाथ।
मुनिसुव्रत जिन व्रत के धारी, पार्श्वनाथ को ध्यायें साथ॥

दोहा

शनि ग्रह दोष निवारने, करते प्रभु गुणगान।
विशद हृदय में आपका, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतरसंवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोलाछन्द)

जल समान निर्मल मन करने, सम्यक दर्श जगाना है।
जन्म जरा से मुक्ती पाने, निर्मल नीर चढ़ाना है॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय जलं नि. स्वाहा।

तन की तपन मिटाने वाला, शीतल चन्दन बतलाया।
भव सन्ताप नशाने वाला, सम्यक् दर्शन गुण गाया॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय चंदनं नि. स्वाहा।

उज्ज्वल तन्दुल चन्द किरण सम, मिलकर यहाँ चढ़ाते हैं।
सम्यक् दर्शन चेतन का गुण, अर्चा कर प्रगटाते हैं॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अक्षतं नि. स्वाहा।

फूलों के उपवन से चुनकर, पुष्प थाल भर लाए हैं।
काम बाण विध्वंस हेतु हम, पूजा करने आए हैं॥

शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय पुष्पं नि. स्वाहा।

अमृत सम नैवेद्य यहाँ हम, आज बनाकर लाए हैं।
जिन पूजा कर रोग क्षुधादिक, पूर्ण नशाने आए हैं॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

रजत थाल में मणिमय दीपक, ज्योर्तिमय लेकर आए।
मोह अंध के नाश हेतु यह, पूजा करने को लाए॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय दीपं नि. स्वाहा।

अगर-तगर चन्दन से मिश्रित, धूप जलाने को लाए।
काल अनादी लगे कर्म के, नाश हेतु जिन पद आए॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय धूपं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल अनुपम, थाल में भर के लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चरण शरण में आए हैं॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय फलं नि. स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, से यह अर्घ्य बना लाए।
पद अनर्घ पाया प्रभु ने रह, पद पाने को हम आए॥
शनि अरिष्ट ग्रह होय निवारण, विशद भावना भाते हैं।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**लेकर प्रासुक नीर यह, देते शांतीधार।**
सम्यक दर्शन प्राप्तकर, पाए भव से पार॥

॥ शान्तयेशांतीधारा ॥

दोहा–**पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लेकर आए नाथ।**
सम्यक श्रद्धा प्राप्त हो, चरण झुकाए माथ॥

॥पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्॥

uonsork iwtk

स्थापना

vgZUr fl¼ vkpk;Z mikè;k;] loZ lk/q tx fgrdkjhA
tSu /eZ ftu pSR; ftuky;] tSukxe eaxydkjhAA
HkO; tho uonsoksa ds izfr] j[krs gSa lE;d J¼kuA
f'ko in ikus ds ge mj esa] djrs Hkko lfgr vkg~okuAA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

¬ ßha Jh vgZfRl¼kpk;ksZikè;k; loZ lk/q ftu /eZ ftukxe ftu pSR; pSR;ky; lewg! v=k ee lfÂfgrks Hko Hko o"kV~ lfÂf/dj.kaA

(चाल छन्द)

izklqd ;g uhj djk,] =k; jksx u'kkus vk,A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA1AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

pUnu ;g Js'B f?klk,] Hko jksx nwj gks tk,A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA2AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

v{kr v{k; in nk;h] ge p<+k jgs gSa HkkoZA
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA3AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

lqjfHkr ;g iq"i p<+k,¡] ge dke jksx fouk,¡A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA4AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

jle; uSos| cuk,] ge {kq/k u'kkus vk,A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA5AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

?k`r ds ;g nhi tyk,] eksgkU/ uk'k gks tk,A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA6AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ge /wi tykrs Lokeh] cu tk,¡ f'ko iFk xkehA
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA7AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

iQy rkts ge ;g yk,] eqDrh in ikus vk,A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA8AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

;g ikou v?;Z p<+k,¡] ge Hkh vu?;Z in ik,¡A
uonso iwtrs HkkoZ] bl tx esa eaxyrk;hAA9AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

nksgk **'kkafr /kjk ls feys] eu esa 'kkafr vikjA**
vr% vkids in ;qxy] nsrs 'kkafr /kjAA

शांतये शांति धारा ......

iq"ikatfy ds fy, ;g] ikou yk, iQwyA
dks± ls eqDrh feys] f'ko in gks vuqdwyA

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्......

izFke oy;

nksgkµ**uonsoksa dh vpZuk djrs ;gk¡ egkuA**
iq"ik×tfydj iwtrs djrs gSa xq.kxkuAA
izFkeoy;ksifjiq"ikatfyaf{kisr~

नव देव के अर्घ्य

(चौपाई)

जो घाती कर्म नशाए, अर्हत् पदवी को पाए।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥
ॐ ह्रीं घातिया कर्मविनाशक श्री अरहंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म के नाशी, जिन सिद्ध मोक्ष पुर वसी।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥
ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आचार्य हैं दीक्षा दाता, शुभ पञ्चाचार प्रदाता।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥
ॐ ह्रीं पञ्चाचार प्रदायक अचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो पढ़ते और पढ़ाते, गुरु उपाध्याय कहलाते।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥
ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञान प्रदायक उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि संगारम्भ को छोड़ें, विषयाशा से मुख मोड़ें।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥
ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थ साधू परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नत्रयुत मनहारी, जिन धर्म है मंगलकारी।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥
ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप जैन धर्मेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ॐकार मयी जिनवाणी, है जन-जन की कल्याणी।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥
ॐ ह्रीं जिन मुखोद भूत जिनागमेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन चैत्य रहे मनहारी, जो वीतराग अविकारी।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमा कृत्रिम जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनगृह चैत्यालय भाई, होते जग मंगलदायी।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्याल्येभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नव देव पूज्य बतलाए, जो जग में मंगल गाए।
हम उनके गुण को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥10॥
ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधू जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

tkI;µ¬ ßha Jh vgZfRl¼kpk;ksZikè;k; loZ lk/q ftu /eZ ftu vkxe ftu pSR; pSR;ky;sH;ks ue%A

जयमाला

nksgkµ **iwtuh; uonsork] tx esa jgs f=kdkyA**
Hkko lfgr xkrs ;gk¡] mudh ge t;ekyAA

(वीर छन्द)

uo dksVh ls uonsokas ds] in iadt esa djsa iz.kkeA
fut Lo:i ds Kku gsrq ge] locks è;krs vkBkas;keAA
/U; /U; vjgar ije izHkq] pkj ?kkfr;k deZ foghuA
loZ yksd ds Kkrk n`"Vk] lE;d~ dsoy Kku izoh.kAA1AA

lgt Kku Lo:i /U; gSa] fl¼ egk izHkq efgekoarA
=kSdkfyd /zop xq.k vuar ds] /kjh fl¼ vuarkuarAA
i×pkpkj ijk;.k vuqie] /U; /U; vkpk;Z egku~A
f'k{kk rh{kk nkrk xq#oj] HkO;kas dks nsa lE;d Kku AA2AA

mikè;k; eqfu/U; yksd esa] }kn'kkax Jqr ds /kjhA
Kkrk æO; Hkko Jqr ds 'kqHk] eks{k iaFk ds vf/dkjhAA
jRu=k; dk ikyu djrs] Kku è;ku ri jgrs yhuA
fo'k;k'kk dsR;kxh eqfuoj] gksrs lE;d~ Kku izoh.kAA3AA

/eZ oLrq LoHkko :i gS] loZ txr esa jgk egkuA
ije vfgalke;h /eZ 'kq+Hk] thoksa dk djrk dY;k.kAA
L;k}kn jfo ls vkyksfdr] lqj uj iwftr yksd egku~A
lUnsgkfnd rks'k jfgr 'kq+Hk] lUr rRo dk ftlesa Kku AA4AA

vgZUrksa dh izkfrgk;Z ;qr] fufoZdkj eq[+k ikouA
dk'B mi y /krw dk vuqie] fcEc cuk gks euHkkouAA
?kaVk rksj.k ls lqlfTtr] ijdksVk la;qDr egku~A
dy'k ;qDr 'kq+Hk f'k[kj euksgj] ls fn[krh gSa Å¡ph 'kkuAA5AA

nksgk¸ iwtk djuo nso dh] iwT; cusa /heku~A
/u oSHko lq[k izkIr dj] djsa vkRed Y;k.kAA

¬ ßha Jh vgZfRl¼kpk;ksZikè;k; loZ lk/q ftu /eZ ftukxe ftu pSR; pSR;ky;sH;ks% iw.kkZ?;± fuoZikehfr LokgkA

nksgk¸ uonsoksa dh HkfDr ls] gks deks± dk uk'kA
^fo'kn* Kku ikdj 'kq+He~] gksos eqDrh okl AA

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्व ग्रहारिष्ट निवारक जिन पूजा

कर्मों ने काल अनादि से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है।।
अब सूर्य सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरु, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतु।।
तुमने कर्मों का अन्त किया, फिर अर्हत् पद को पाया है।
प्रभु उभयलोक की शांति हेतु, मेरा भी मन ललचाया है।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिना:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

हम जन्म मृत्यु अरु जरा के, रोग से दुख पाये हैं।
उत्तम क्षमादि धर्म पाने, नीर निर्मल लाये हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के संताप से, मन में बहुत अकुलाए हैं।
अब भव भ्रमण से पार पान, चरण चंदन लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके बहुत अटके जगत में, पार पाने आए हैं।
अक्षय निधि दो नाथ हमको, अक्षत चढ़ाने लाए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय तृष्णा के भँवर में, जानकर उलझाए हैं।
ना काम का हो वास उर में, पुष्प लेकर आए हैं।।
नवकोटि से वृषभादि जिन की, कर रहे शुभ अर्चना।
ग्रह शांति से परमार्थ सिद्धि, हेतु पद में वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हम क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाए हैं।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।

नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादिजिन, के पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ!**
नवग्रह मेरे शांत हों, चरण झुकाएँ माथ।।शांतये शांतिधारा

दोहा–**जगत पूज्य तुम हो प्रभो! जगती पति जगदीश।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

f}rh; oy;

nksgk\uxzgkfj"Vuo dk fo'kn] gks; fudkj.k ukFkA
iq"ik×tfydj iwtrs] pj.k >qpkrs ekFkAA

f}rh;oy;ksifjiq"ikatfya f{kisr~

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांति पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरगुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राहू ग्रह के है प्रभु नाशी, नेमिनाथ जिन शिवपुर वासी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ति सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाय, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाय।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा

गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल॥

चौबोला छन्द

जगत गुरु को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन॥
नभ में अधर जिनालय मे जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन॥1॥
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से॥
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमि सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव॥2॥
गुरु ग्रह की शांति हेतु हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज॥
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते॥3॥
राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें॥
केतु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें॥
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांति कारक, सर्व जगत मंगलकारी॥4॥
जन्म लग्न राशि के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित हरते॥
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्र बाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज॥5॥

दोहा

चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा

चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

Jh 'khryukFkiwtk

स्थापना (सोरठा)

पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतियादाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥1॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥2॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥3॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥4॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥5॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥6॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षा वन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥3॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥4॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

izFkeks'B

nksgkµ 'khryukFk ftusUnz dh vpkZ djus vktA
iq"ik×tfydj djrs fo'kn] ikus f'ko in jktAA

izFkeks'Bsifjiq"ikatfyfa{kis~

आगे लिखे मंत्र पुष्प चढ़ाकर या धूप से हवन कर मंत्र बोले

1. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्ताराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं पुरूदेवाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं आधिदेवतायै नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थिति देशकाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण वर्णाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण प्रकृतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

28. ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बंधवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़गोचराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं रूक्माभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं शीतलनाथाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम॥

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर माहिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिनराय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय॥1॥

पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।
जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष॥2॥
मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान॥3॥
प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास॥4॥
स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।
जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण॥5॥
प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज॥6॥

दोहा– कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।
भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

Jh'kkafrukFkiwtk

स्थापना (सखी छन्द)

हैं शांतिनाथ शिवकारी, इस जग में मंगलकारी।
निज उर में हम तिष्ठाएँ, पूजा करके सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥2॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥3॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥4॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥5॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥6॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥7॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥8॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥9॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए॥1॥
ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया॥2॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया॥3॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए॥4॥
ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

f}rh;dks'B

nksgkµ'kkafrukFk Hkxoku gSa] 'kkarh ds nkrkjA
iq"ik×tfy dj iwtrs] ftu in ckjEckjAA

f}rh;ksdks'Bsifjiq"ikatfyf{kisr~

आगे लिखे मंत्र पुष्प चढ़ाकर या धूप से हवन कर मंत्र बोले

1. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं संध्याभ्रवभ्रवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं शांतकुंभनिभप्रभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तजांबूनदद्युतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये देशकाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय प्रकृतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्ते नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनिष्ठाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिकृये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं कांतिमये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

41. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठानाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबंधाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनाथाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द–तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।

दोहा– **शांति के हैं कोष जिन, शांती के आधार।**
विशद शांति पाए स्वयं, शांति के दातार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मल्लिनाथ पूजा

स्थापना (चाल छन्द)

जो मल्लिनाथ को ध्याते, वे विजय मोह पर पाते।
आह्वानन करने वाले, होते हैं जीव निराले।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्घ शम्भू छंद)

निज अनुभव अमृत जल पीकर, त्रिविध ताप का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

निज गुण का शीतल चंदन पा, भवाताप का हरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत यह, श्री जिनेन्द्र के चरण धरें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जिसके कारण जग में भटके, काम रोग का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तन का पोषक क्षुधा रोग है, उसका अब अपहरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विशद ज्ञान का दीप जलाकर, जीवन अपना चमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भ्रमण कराया है कर्मों ने, उनका अब हम हनन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष फल पाकर के हम, शिव नगरी को गमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पद अनर्घ पाकर के हम भी, निज चेतन को चमन करें।।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

r`fr;dks'B

nksgk\ pdeZ eYy thrs lHkh] efYyukFk HkxokuA
ftu in iq'ik×tfy fo'kn] djrs ;gk¡ iz/kuAA

iz#edks'Bksifjiq|'ikatfyf{kis~

आगे लिखे मंत्र पुष्प चढ़ाकर या धूप से हवन कर मंत्र बोले

1. ॐ ह्रीं अर्हं बृहत वृहस्पतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं गिरापतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृतये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

22. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ीयसे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं ईशिये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं अमोध शासनाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ जिन, जगती पति जगदीश।
गुण गावें सब भाव से, सुर नर पशु के ईश॥

(अवतार छन्द)

श्री मल्लिनाथ जिनराज, शिव पदवी पाए।
अपराजित से जिनराज, चयकर के आए॥1॥
मिथला नगरी के भूप, कुम्भ कहलाए हैं।
माँ प्रजावती के गर्भ, में प्रभु आए है॥2॥
इक्ष्वाकू नन्दन आप, चिन्ह कलश धारी।
है स्वर्ण समान सुदेह,जिनकी मनहारी॥3॥
है पच्चिस धनुष महान, तन की ऊँचाई।
आयू पचपन हज्जार, वर्ष की शुभगाई॥4॥
प्रभु तड़ित चमकता देख, दीक्षा को धारे।
फिर किएँ आत्म का ध्यान, किए सुर जयकारे॥5॥
प्रभु पाए केवल ज्ञान, आतम ध्यान किए।
भवि जीवों के हित हेत, देशना आप दिए॥6॥

दोहा– कर्म नशाए आपने, भव से पाया पार।
भव्य जीव चरणों 'विशद', नमन करें शतबार॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, पद में बारम्बार।
भक्त बने हम आपके, पाने भव से पार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

'kfun'kkfuokjdJheqfulqozrukFkiwtk

स्थापना (सखी छन्द)

हैं मुनीव्रतों के धारी, श्री मुनिसुव्रत अविकारी।
हम निज उर में तिष्ठाते, पद सादर शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्ग्विणी छन्द)

शुद्ध यमुना के जल से ये झारी भरें,
नाथ के पाद में तीन धारा करें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन घिसाके कटोरी भरें,
नाथ पादाब्ज में चर्च के दुख हरें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

श्वेत तन्दुल शशी रश्मि सम लाए हैं,
नाथ चरणों चढ़ा हम भी सुख पाए हैं।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित कुसुम ले लिए,
जिन प्रभू के चरण आज अर्पण किए।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस ताजे चरू यह बना लाए हैं,
क्षुधा व्याधी नशाने को हम आए है।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप ज्योती जलाई ये हमने अहा,
मोह हरना मेरा लक्ष्य अन्तिम रहा।

मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप घट में सुरभि धूप की यह जले,
कर्म निर्मूल हों देह कांती मिले।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ये ताजे चढ़ाते सरस फल भले,
मोक्ष की आश मेरी प्रभु अब फले
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठ द्रव्यों का यह अर्घ्य लाए सही,
प्राप्त हो नाथ हमको अब अष्टम मही।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शनि ग्रहारिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभू जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि दशमी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

pqFkZ dks'B

nksgk¾uxzgkfj"V 'kfu dk fo'kn] gks; fuokj.k ukFkA
eqfu lqozr in iwtrs] iq"ik×tfy ds lkFkAA

pqFkZ dks'Bksifj iq"ikatfy {ksis~

आगे लिखे मंत्र पुष्प चढ़ाकर या धूप से हवन कर मंत्र बोले

1. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं वशेन्द्रियाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

14. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधामर्षये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं देवाये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मै नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं योगिवंदिताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल विषयार्थ दृशे नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं दांताय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिपरायणाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

46. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्चाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।
51. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः मम शनिग्रह शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।**
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई॥
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥

दोहा– अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावे वह शिव धाम॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

समुच्चय जयमाला

दोहा– होय निवारण शनीग्रह, का मेरे तत्काल।
इसीलिए हम गा रहे, आज यहाँ जयमाल॥

(ज्ञानोदय छन्द)

होय उपद्रव शनिग्रह का तो, दु:ख पाते जग के प्राणी।
श्री जिनेन्द्र की पूजा उनके, जीवन में हो कल्याणी॥
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधु परमपद के धारी।
जैनागम जिनबिम्ब जिनालय, जैन धर्म मंगलकारी॥1॥

नव कोटी से नव देवों की, अर्चा करके महति महान।
भव्य जीव पाते है पावन, अतिशयकारी पुण्य निधान॥
पुण्य का फल अर्हत पद गाया, जग वैभव क्या नहीं मिले।
मुक्ती पद मिलता है जिससे, जीवन रवि क्यों नहीं खिलें॥2॥

तन मन की जो तपन मिटाकर, करते जीवों का कल्याण।
शीतलनाथ शील के स्वामी, शीतलता का देते दान॥
शांतिनाथ शांती के दाता, करते जग को शांति प्रदान।
भव्य जीव अत: एव आपका, विशदभाव से करते ध्यान॥3॥

रहे कर्म मल्लो के जेता, नाम आपका मल्लीनाथ।
जिनकी अर्चा करते प्राणी, चरणों सदा झुकाएँ माथ॥
मुनिसुव्रत जी व्रत के धारी, होकर किए आत्म का ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए जो, प्रगटाए शुभ केवलज्ञान॥4॥

पार्श्वमणी सम पार्श्वनाथ जी, के चरणों का कर स्पर्श।
अपना वे सौभाग्य जगाकर, भव्य जीव दाते हैं हर्ष॥
ग्रहारिष्ट से मुक्ती पाते, जिन अर्चा करके जग जीव।
वे अपना सौभाग्य जगाकर, पाते अतिशय पुण्य अतीव॥5॥

दोहा–जिन अर्चा करते विशद, पाने शिव सौपान।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करने से गुणगान॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री शीतलनाथ, शांतिनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनेन्द्र की अर्चना, करके जग के जीव।
सुख शांती सौभाग्य प्रद, पाते पुण्य अतीव॥

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा– नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार॥
चालीसा नवग्रह यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार॥

(चौपाई)

नवग्रह नभव में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले।
रवि शशि मंगल बुध गुरु गाये, शुक्र शनि राहु केतु बताए॥
कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताए।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते॥
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी॥
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे॥
बेटा-बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति की ना राह दिखावे॥
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभु को वर नर ध्याये॥
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये।
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाए॥
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थ नमि वीर कहाए॥
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्द, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन॥
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक नामी।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए॥

शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता।
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए॥
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतु ग्रह की बाधा हरते।
जो चौबीस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांती उपाए॥
गगन गमन वह करते भाई, मानव को ग्रह बड़ा बताए॥
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी।
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ॥
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से ध्यान लगाएँ।
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए॥
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याएँ।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों को बने सहारा॥
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्लि वीर सुविधि जिन गाए॥
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी।
नवग्रह शांति जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांति सौभाग्य जगाएँ।
हमें सहारा दो हे स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी॥

दोहा– चालीसा चालीसा दिन, पढ़ें भक्ति के लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का रहे कभी न योग॥
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश॥

ग्रह निवारक तीर्थंकर की आरती

गाँए जी गाएँ तीर्थंकर की, आरति मंगल गाएँ।
नवग्रह शान्ति करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन्, भगवन् के चरणों में नमन्॥टेक॥
रवि अरिष्ट ग्रह शान्ती हेतु, पद्मप्रभु को ध्याएँ।
भक्ति भाव से दीप जलाकर, आरति मंगल गाएँ॥
चन्द्र अरिष्ट की शान्ती हेतु, चन्द्र प्रभू गुण गाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ॥1॥
जिनवर.....

भौम अरिष्ट की शान्ति करने, वासुपूज्य को ध्याएँ।
चरण वन्दना करने हेतु, चम्पापुर को जाएँ॥
बुध अरिष्ट की शान्ति हेतु, वसु तीर्थंकर ध्याएँ।
नवग्रह शांती करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ॥2॥
जिनवर.....

गुरु अरिष्ट की शान्ति करने, वृषभादि गुण गाएँ।
अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, अष्ट जिनेश्वर ध्याएँ॥
शुक्र अरिष्ट की शान्ति करने, पुष्पदन्त सिर नाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ॥3॥
जिनवर.....

शान्ति होवे शनि अरिष्ट की, मुनिसुव्रत को ध्याएँ।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत होय मम्, नेमिनाथ गुण गाएँ॥
मुनिसुव्रत सम व्रत पाने की, 'विशद' भावना भाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ॥4॥
जिनवर.....

केतु ग्रह हो शांत प्रभु हम, मल्लि पार्श्व जिन ध्याएँ।
चौबीसों तीर्थंकर जिनकी, आरति कर हषाएँ॥
सुख साता से जीवन जीकर, सिद्ध दशा को पाएँ।
नवग्रह शांती करने हेतु, चरणों शीश झुकाएँ॥5॥
जिनवर.....

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वा.

दोहा– गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री विशद सागर जी चालीसा

जैनाचार्य को नमन है, करें पाप का नाश।
श्री गुरुवर की अर्चना, करती ज्ञान प्रकाश॥
निःस्वार्थ हो जो करें, भक्ती अपरम्पार।
चालीसा को सब पढ़ें, नित प्रति बारम्बार॥

(चौपाई)

जय जय जय गुरुदेव हमारे, जैन धर्म के आप सितारे।
सद्गुण भंडार है पाया, सर्व जगत में नाम कमाया॥
जय गुरुदेव जी नमस्कार है, रत्नत्रय का चमत्कार है।
नाथूराम के राजदुलारे, इन्दर माँ के नयन के तारे॥
कुपी ग्राम में जन्म है पाया, आंगन में एक चाँद है आया।
माता पिता का मन हर्षाया, नाम रमेश आपने पाया॥
युवा अवस्था तुमने धारी, मन ही मन में सोच विचारी।
विराग सागर को किया समर्पण, देखा आपने निज का दर्पण॥
जीवन की अनुपम हैं गलियाँ, मुरझा जाए ना निज की कलियाँ।
मुनिवर के व्रत तुमने पाए, नग्न दिगम्बर रूप में आए॥
कर्मों को तुम मार रहे हो, अपने भाव सम्हाल रहे हो।
स्वर्गों में भी चर्चा होती, देवों द्वारा अर्चा होती॥
जन-जन के हो प्यारे गुरुवर, रहते जग से न्यारे गुरुवर।
निज में निज का चिन्तन करते, जिनवाणी का मंथन करते॥
समता को तुम धारण करते, दुःखों से तुम कभी न डरते।
स्वर्गों की तुम्हें चाह नहीं है, भव सुख की परवाह नहीं है॥
वैद्यों के तुम वैद्यराज हो, रोगों का करते इलाज हो।
बच्चे बूढ़े सब आते हैं, नाम तुम्हारा सब ध्याते हैं॥
वाणी के नित झरने झरते, दुःखों को तुम सबके हरते।
अमीर गरीब का भेद न करते, दया भाव तुम सब पर धरते॥

महावीर के तुम अनुयायी, जैन धर्म की शिक्षा पायी।
निज गुण में अवगाहन करते, काय क्लेश का पालन करते॥
कीर्ति तुम्हारी जग में न्यारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।
क्रोध, मान जो कभी न करतें, स्वपर्याय में सदा विचरते॥
आतम चिन्तन में चित् धरते, मूल गुणों का पालन करते।
स्याद्वाद मय तेरी वाणी, जग में तुम सम कोई न ज्ञानी॥
ऋषियों के तुम ऋषीराज हो, जैन धरम के महाराज हो॥
रागद्वेष तुम कभी न करते, परीषहों को हँसकर सहते॥
काया में अनुराग न करते, वैराग्य के सदा भाव उमड़।
कई विधान के आप रचियता मोक्ष मार्ग के अनुपम॥
संसारिक सब वस्तु निराली, कल्प वृक्ष की तुम हो डाली।
स्वर्णिम जयंति का अवसर आया, उल्लास सभी के मन छाया॥
गुरु महिमा को कह ना पाऊँ, सपनों में भी गुरु गुण गाऊँ।

दोहा

मैं बालक अल्पज्ञ हूँ, नहीं है मुझमें ज्ञान।
गुरु चालीसा नित पढ़ो, करो गुरु का ध्यान।
चालीसा चालीस वार, सुबह पढ़ो या शाम।
कार्य पूर्ण हो जाएगा, रखो हृदय श्रद्धान॥

–ब्र. ऋद्धि दीदी

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर स्थित पार्श्वनाथ नगरे एयर पोर्ट समीपे श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर स्थापना पञ्चकल्याणक पावन अवशरे वी. नि. 2542 कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्याँ सोमवार वासरे श्री शनिग्रहारिष्ट निवारक विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात।

Ñfr % fo'kn'kfuxzgkfj'Vfuokjdfo/kku

कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2016 ' प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी
सहयोगी	:	क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी, क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
सम्पर्क सूत्र	:	9829127533, 9910739220
प्राप्ति स्थल	:	1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो. : 9414812008
		2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566
		3. विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879
		4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य	:	25/- रु. मात्र

–: अर्थ सौजन्य :–

स्व. श्री गहलाल जी जैन की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र
Jhefr ojthnsoh ik.M;k ifr Jh Qwypan vuwi] jtuh'k]
श्री ... कुमार ... कुमार ... अरुण कुमार
tYkspukvf[kys'k] fufr[kys'k]NK,k,oa eku'kh
एवं प्रपौत्र ... वाले)
318, रजनी विहार, अजमेर रोड, जयपुर (राज.) मो. : 09414055883
41/64, वरुणी पथ मानसरोवर, जयपुर (राज.) मो.: 9636063218

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
09811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

eqnzd%ikjlizdk'ku] fnYyh Qksuua-%09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com